2026
EXAMINATION

CBSE
QUESTION & CONCEPT BANK

अध्यायवार एवं विषयवार

with 50% Competency Questions

CLASS 10

Important Questions with Detailed Explanations
NCERT & EXEMPLAR

Handpicked & High yield from Past 10 Years
PYQs

Revision Blue Print & Solved Questions
COMPETENCY FOCUSED

CBSE 2025, 2024 & 2023 with Handwritten Solutions
LATEST CBSE PAPERS

As per Latest Pattern
MOCK TESTS

हिन्दी-अ

अध्यायवार विश्लेषण

विगत 6 वर्ष के प्रश्नपत्र

हिन्दी-अ						
अध्याय	2020	2021	2022	2023	2024	2025
क्षितिज भाग-2 (पद्य)		परीक्षा स्थगित				
पद	6		1	2	2	5
राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	2		-	1	5	-
आत्मकथ्य	2		2	2	2	2
उत्साह एवं अट नहीं रही है	6		4	-	4	2
यह दंतुरित मुसकान एवं फसल	2		2	5	4	2
संगतकार	2		5	2	1	2
क्षितिज भाग-2 (गद्य)						
नेता जी का चश्मा	10		4	4	1	5
बालगोबिन भगत	2		-	2	2	2
लखनवी अंदाज	2		4	2	1	-
एक कहानी यह भी	2		-	2	5	2
नौबतखाने में इबादत	3		3	3	3	2
संस्कृति	3		3	-	2	2
कृतिका भाग-2						
माता का आँचल	2		2	4	4	4
साना-साना हाथ जोड़ी	2		2	4	4	4
मैं क्यों लिखता हूँ	2		2	4	4	4
व्यावहारिक व्याकरण						
अपठित गद्यांश एवं पद्यांश	10		-	10	10	14
रचना के आधार पर वाक्य भेद	4		-	4	4	4
वाच्य	4		-	4	4	4
पद परिचय	4		-	4	4	4
अलंकार	-		-	4	4	4
रस	4		-	-	-	-
अनुच्छेद लेखन	10		5	6	6	6
पत्र लेखन	5		5	5	5	5
स्ववृत्त और ई-मेल लेखन	-		-	5	5	5
विज्ञापन एवं संदेश लेखन	5		5	4	4	4

**यहाँ पर सभी अध्याय के प्रश्नों का विश्लेषण किया गया है अतः कुल अंक परीक्षा के अंक से भिन्न हो सकते हैं।*

प्रश्नवार विश्लेषण

वर्ष			वस्तुनिष्ठ प्रश्न			
	अपठित	रचनात्मक लेखन	व्यावहारिक व्याकरण	पाठ्यपुस्तक		
				बहुविकल्पीय	गद्यांश एवं पद्यांश आधारित	लघुत्तरीय
2025	2 (v, v)	4	4 (iv, iv, iv, iv)	-	2 (v, v)	3 (iii, iii, ii)
2024	2 (v, v)	4	4 (iv, iv, iv, iv)	2 (ii, ii)	2 (v, v)	3 (iii, iii, ii)
2023	2 (v, v)	4	4 (iv, iv, iv, iv)	2 (ii, ii)	2 (v, v)	3 (iii, iii, ii)
2022 (I)	-	4	-	-	-	3 (iv, iii, ii)
2021	परीक्षा स्थगित					
2020	1 (vi)	3	4 (iv, iv, iv, iv)	-	2 (iii, iii)	3 (iv, iv, ii)

परीक्षावार विश्लेषण

2021

- ❖ परीक्षा स्थगित

2022

- ❖ 40-40 अंकों की परीक्षा का दो चरणों में आयोजन
- ❖ प्रथम चरण में पाठ्यपुस्तक से लघुत्तरीय प्रश्न और निबंध, पत्र, विज्ञापन और शुभकामना संदेश लेखन के प्रश्न
- ❖ द्वितीय चरण में पाठ्यपुस्तक से बहुविकल्पीय प्रश्न और व्याकरण से बहुविकल्पीय प्रश्न

2023

- ❖ अपठित गद्यांश एवं पद्यांश से बहुविकल्पीय प्रश्न
- ❖ रचनात्मक व्याकरण से बहुविकल्पीय प्रश्न
- ❖ पाठ्यपुस्तक से बहुविकल्पीय, गद्यांश एवं पद्यांश आधारित और लघुत्तरीय प्रश्न
- ❖ लेखन में अनुच्छेद लेखन, औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र लेखन, स्ववृत्त, ई-मेल, विज्ञापन और शुभकामना संदेश लेखन

2024

- ❖ कोई परिवर्तन नहीं। यथावत

2025

- ❖ अपठित गद्यांश एवं पद्यांश से बहुविकल्पीय एवं अतिलघुत्तरीय प्रश्न
- ❖ व्यावहारिक व्याकरण से लघुत्तरीय प्रश्न
- ❖ पाठ्यपुस्तक से बहुविकल्पीय, गद्यांश एवं पद्यांश आधारित और लघुत्तरीय प्रश्न
- ❖ लेखन में अनुच्छेद लेखन, औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र लेखन, स्ववृत्त, ई-मेल, विज्ञापन और शुभकामना संदेश लेखन

पुस्तक प्रयोग के निर्देश

यह पुस्तक विभिन्न प्रकार के आकर्षक और सूचनाप्रद तत्वों के माध्यम से आपकी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी के लिए तैयार की गई है। पुस्तक के समुचित प्रयोग के लिए उपयुक्त तरीका निम्न प्रकार से है–

CBSE 2025

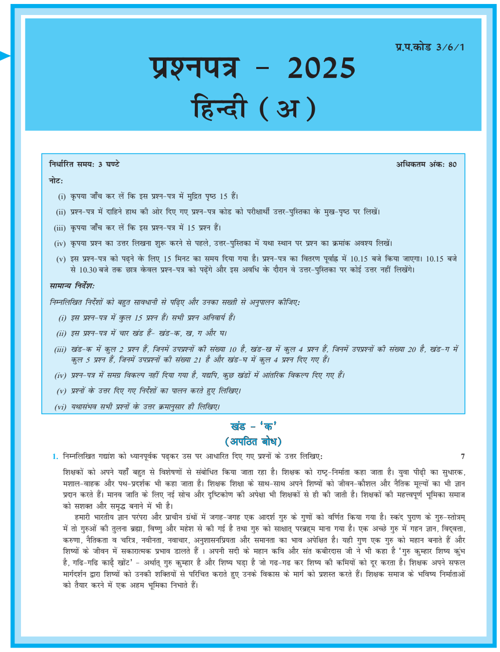

प्रश्न पत्र

छात्रों को अध्ययन के लिए CBSE बोर्ड परीक्षा 2025, 2024 एवं 2023 के हस्तलिखित हल प्रदान किये गये हैं।

CBSE 2024

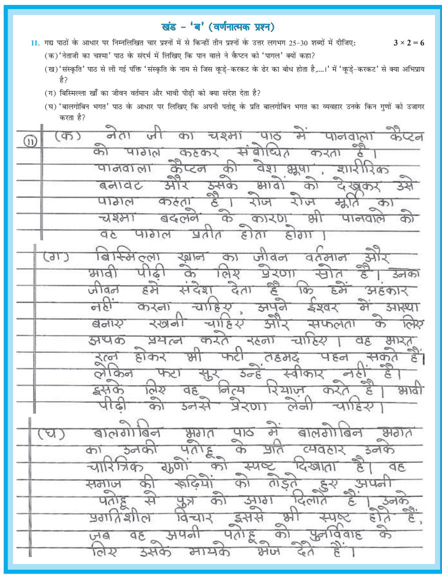

खंड – 1

मुख्य परीक्षा में कुल 14 अंकों के प्रश्न इस खंड से पूछे जाएँगे। इसमें एक अपठित गद्यांश और एक अपठित पद्यांश सम्मिलित है।

इसके अभ्यास हेतु 10 अपठित गद्यांश और 10 अपठित पद्यांश पाठ में दिये गये हैं।

अपठित पद्यांश

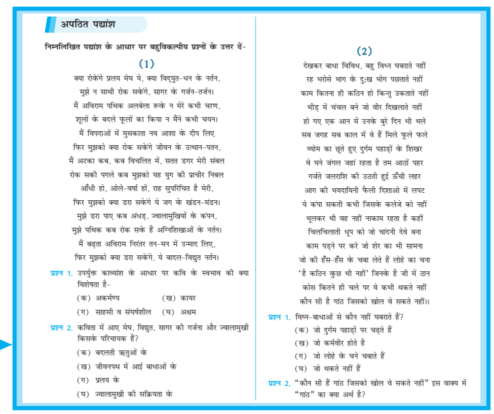

अपठित गद्यांश

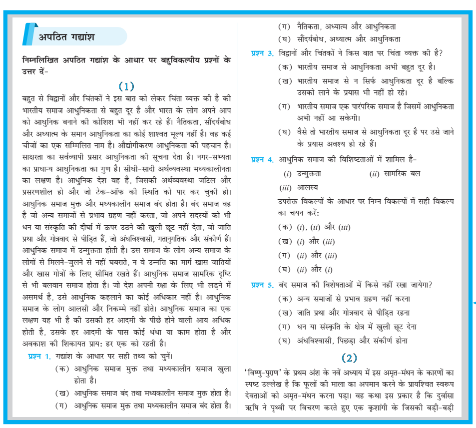

परिभाषा एवं भेद

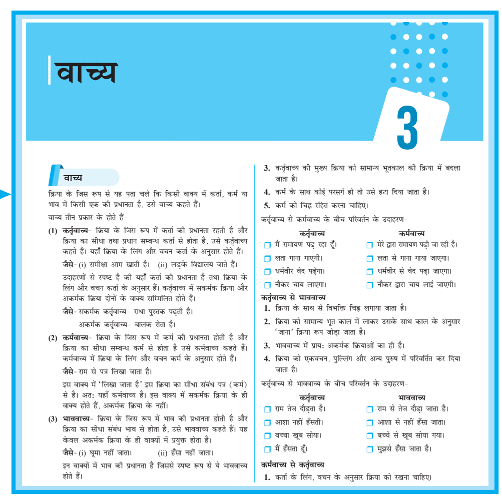

खंड – 2

पाठ्यक्रम में व्याकरण बोध के उद्देश्य से मुख्यतः कुल 4 व्याकरण के विषय सम्मिलित हैं। रचना के आधार पर वाक्य भेद, वाच्य, पद परिचय और अलंकार इन चार विषयों से मुख्य परीक्षा में कुल 16 अंक के प्रश्न पूछे जाएँगे। विषय की समझ के लिए सरल उदाहरणों के द्वारा परिभाषा बताई गई हैं तथा अभ्यास हेतु वैकल्पिक प्रश्न भी दिये गये हैं।

खंड - 2

पुस्तक में रचनात्मक व्याकरण का सचित्र वर्णन एवं अभ्यास दिया गया है।

सचित्र वर्णन

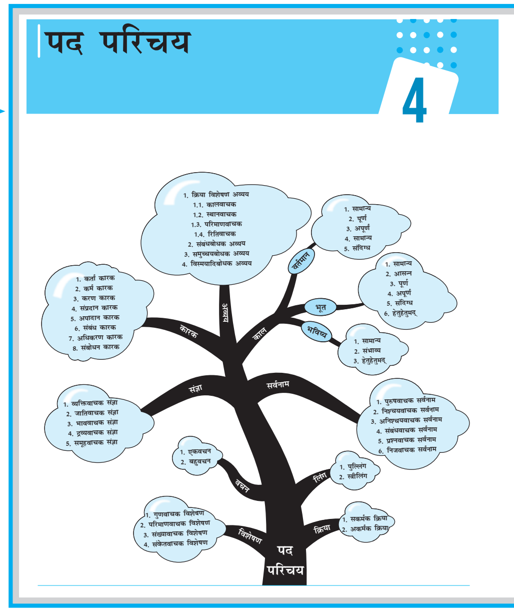

अभ्यास

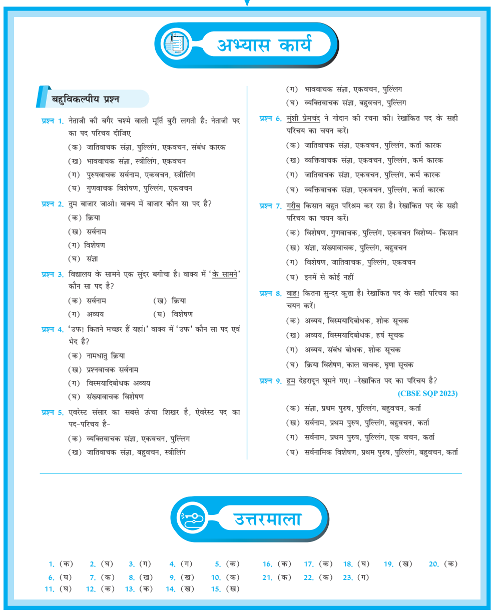

खंड - 3

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-2) के पद्य खण्ड में कविता को भावार्थ सहित बताया गया है। साथ ही पाठ भार, कवि परिचय एवं पाठ की सीख भी दी गयी है।

शब्दार्थ एवं भावार्थ

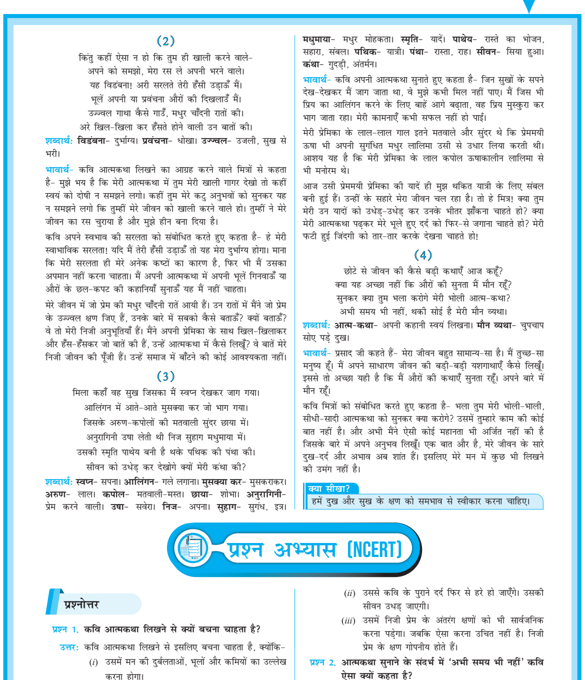

पाठ

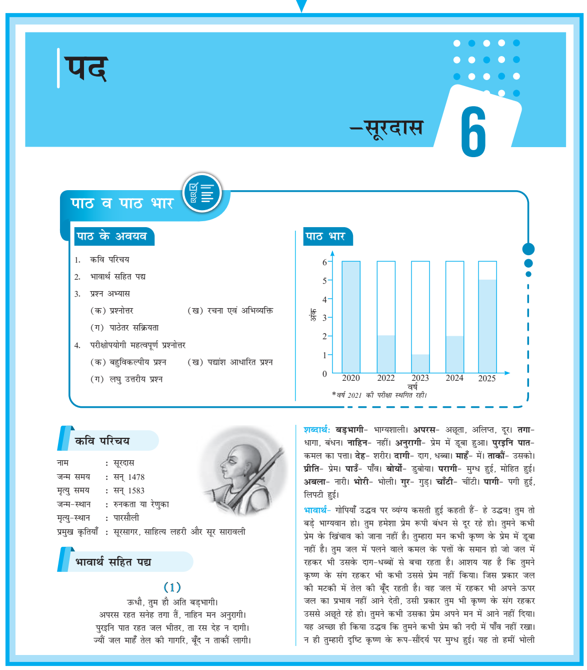

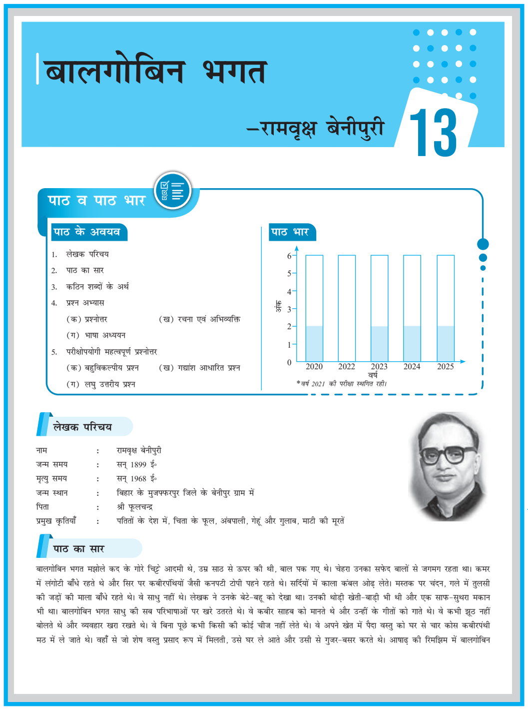
बालगोबिन भगत

–रामवृक्ष बेनीपुरी

13

पाठ व पाठ भार

पाठ के अवयव

पाठ भार

लेखक परिचय

पाठ का सार

पाठ एवं पाठ का सार

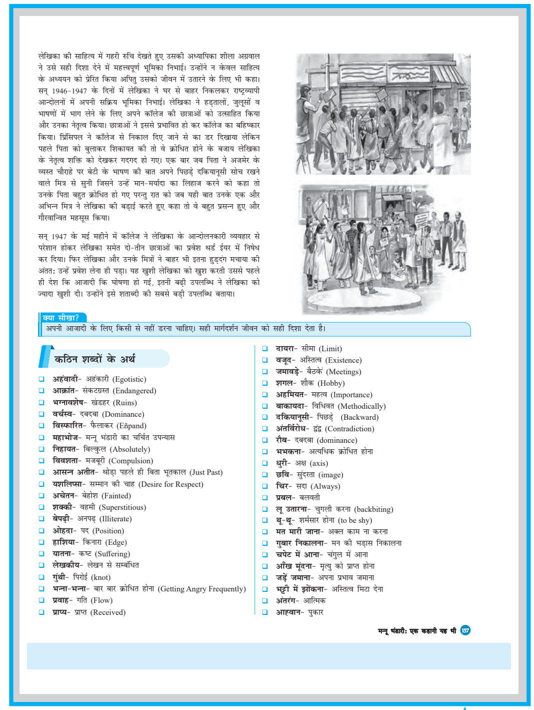
कठिन शब्दों के अर्थ

पाठ एवं शब्दार्थ

खंड - 3

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-2 एवं कृतिका भाग-2) के गद्य खण्ड में पाठ के सार को कठिन शब्दों के अर्थ के साथ बताया गया है। NCERT प्रश्नों का हल और परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न भी साथ ही दिये गये हैं। पाठों में CBSE APQ 2023, CBSE SQP 2023, CBSE 2023, 2022, 2020, 2019 के प्रश्न सम्मिलित हैं।

NCERT अभ्यास

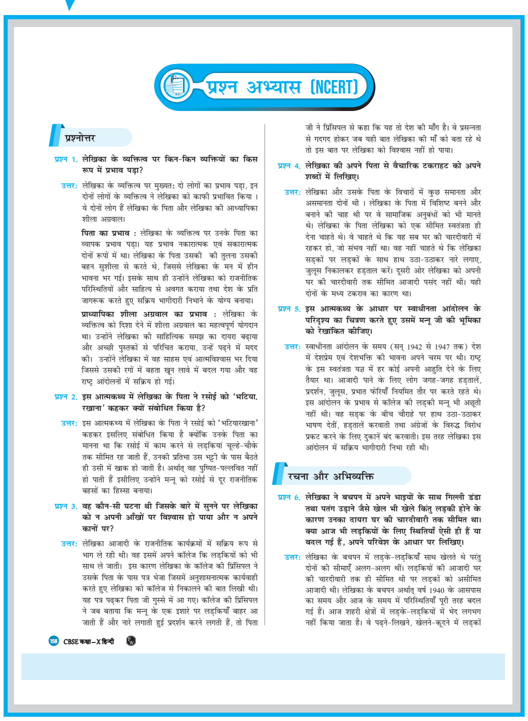
प्रश्न अभ्यास (NCERT)

प्रश्नोत्तर

रचना और अभिव्यक्ति

परीक्षोपयोगी प्रश्न

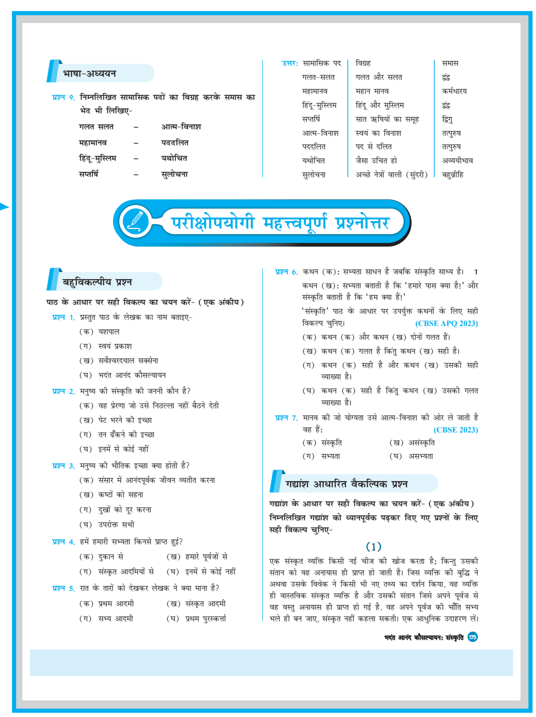
भाषा-अध्ययन

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश आधारित वैकल्पिक प्रश्न

खंड - 4

लेखन हेतु पूर्व की परीक्षाओं के हल, महत्वपूर्ण विषय एवं अभ्यास हेतु संभावित विषय दिये गये हैं। टॉपर्स कॉपी भी दि गयी है।

संभावित विषय

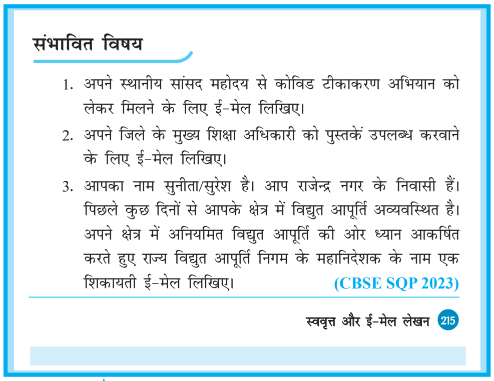
संभावित विषय

1. अपने स्थानीय सांसद महोदय से कोविड टीकाकरण अभियान को लेकर मिलने के लिए ई-मेल लिखिए।
2. अपने जिले के मुख्य शिक्षा अधिकारी को पुस्तकें उपलब्ध करवाने के लिए ई-मेल लिखिए।
3. आपका नाम सुनीता/सुरेश है। आप राजेन्द्र नगर के निवासी हैं। पिछले कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति अव्यवस्थित है। अपने क्षेत्र में अनियमित विद्युत आपूर्ति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए राज्य विद्युत आपूर्ति निगम के महानिदेशक के नाम एक शिकायती ई-मेल लिखिए। (CBSE SQP 2023)

स्ववृत्त और ई-मेल लेखन 215

महत्वपूर्ण विषय

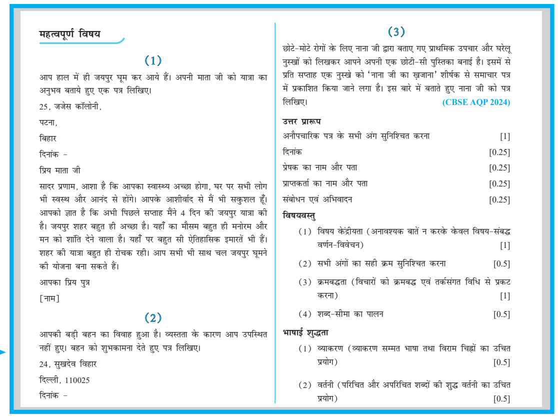
महत्वपूर्ण विषय

(1)

आप हाल में ही जयपुर घूम कर आये हैं। अपनी माता जी को यात्रा का अनुभव बताते हुए एक पत्र लिखिए।

(2)

(3)

उत्तर प्रारूप

विषयवस्तु

भाषाई शुद्धता

पूर्व के हल

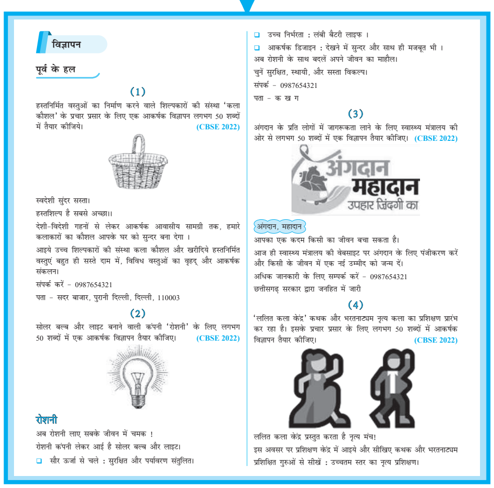
विज्ञापन

पूर्व के हल

टॉपर्स कॉपी

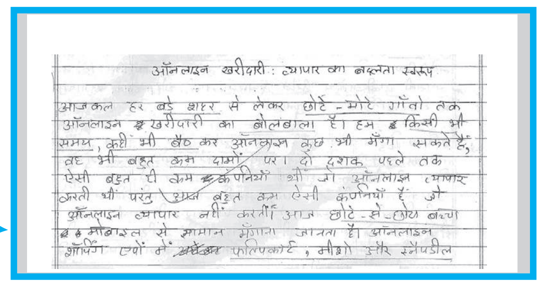
ऑनलाइन खरीदारी : व्यापार का बदलता स्वरूप

अभ्यास प्रश्नपत्र

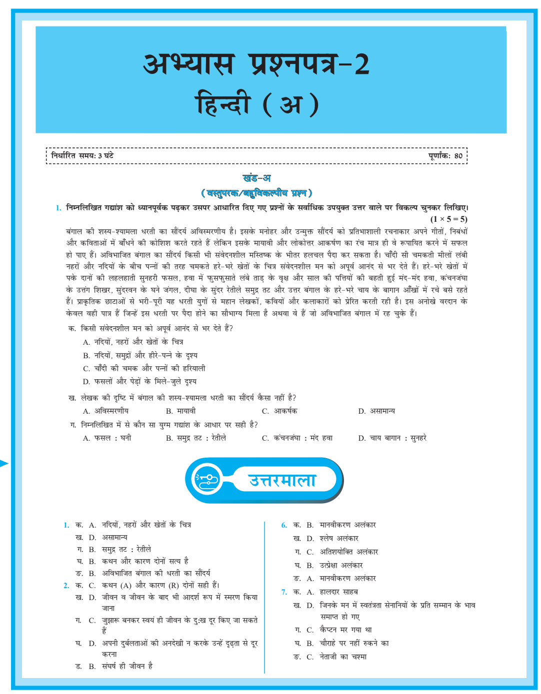
अभ्यास प्रश्नपत्र-2

हिन्दी (अ)

निर्धारित समय: 3 घंटे   पूर्णांक: 80

खंड-अ

(वस्तुपरक/बहुविकल्पीय प्रश्न)

उत्तरमाला

अभ्यास प्रश्नपत्र

छात्रों के अभ्यास हेतु 2 अभ्यास प्रश्नपत्र हल सहित प्रदान किये गये हैं।

विषय-सूची

प्रश्नपत्र – 2025 — **1–15**

प्रश्नपत्र – 2024 — **16–32**

प्रश्नपत्र – 2023 — **33–51**

खंड-1

अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

1. अपठित गद्यांश एवं पद्यांश — 3–18

खंड-2

व्यावहारिक व्याकरण

2. रचना के आधार पर वाक्य भेद — 21–24
3. वाच्य — 25–27
4. पद परिचय — 28–37
5. अलंकार — 38–42

खंड-3

पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-2 (पद्य)

6. सूरदास: पद — 45–52
7. तुलसीदास: राम लक्ष्मण परशुराम संवाद — 53–61
8. जयशंकर प्रसाद: आत्मकथ्य — 62–68
9. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': उत्साह एवं अट नहीं रही है — 69–76
10. नागार्जुन: यह दंतुरित मुसकान एवं फसल — 77–85
11. मंगलेश डबराल: संगतकार — 86–92

खंड-3

पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-2 (गद्य)

12. स्वयं प्रकाश: नेताजी का चश्मा	93-102
13. रामवृक्ष बेनीपुरी: बालगोबिन भगत	103-111
14. यशपाल: लखनवी अंदाज	112-119
15. मन्नू भंडारी: एक कहानी यह भी	120-127
16. यतींद्र मिश्र: नौबतखाने में इबादत	128-135
17. भदंत आनंद कौसल्यायन: संस्कृति	136-142

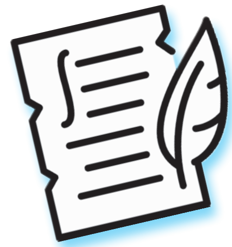

पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग-2

18. शिवपूजन सहाय: माता का अँचल	143-148
19. मधु कांकरिया: साना-साना हाथ जोड़ि	149-155
20. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय': मैं क्यों लिखता हूँ	156-160

खंड-4

रचनात्मक लेखन

21. अनुच्छेद लेखन	163-171
22. पत्र लेखन	172-176
23. स्ववृत्त और ई-मेल लेखन	177-179
24. विज्ञापन एवं सन्देश लेखन	180-183
अभ्यास प्रश्नपत्र - 1	187-195
अभ्यास प्रश्नपत्र - 2	196-205

प्र.प.कोड 3/6/1

प्रश्नपत्र – 2025
हिन्दी (अ)

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 80**

नोट:

(i) कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 15 हैं।

(ii) प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए प्रश्न-पत्र कोड को परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।

(iii) कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 15 प्रश्न हैं।

(iv) कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, उत्तर-पुस्तिका में यथा स्थान पर प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

(v) इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

सामान्य निर्देश:

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख्ती से अनुपालन कीजिए:

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 15 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) इस प्रश्न-पत्र में चार खंड हैं- खंड-क, ख, ग और घ।

(iii) खंड-क में कुल 2 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 10 है, खंड-ख में कुल 4 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है, खंड-ग में कुल 5 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 21 है और खंड-घ में कुल 4 प्रश्न दिए गए हैं।

(iv) प्रश्न-पत्र में समग्र विकल्प नहीं दिया गया है, यद्यपि, कुछ खंडों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।

(v) प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए।

(vi) यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार ही लिखिए।

खंड – 'क'
(अपठित बोध)

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: **7**

शिक्षकों को अपने यहाँ बहुत से विशेषणों से संबोधित किया जाता रहा है। शिक्षक को राष्ट्र-निर्माता कहा जाता है। युवा पीढ़ी का सुधारक, मशाल-वाहक और पथ-प्रदर्शक भी कहा जाता है। शिक्षक शिक्षा के साथ-साथ अपने शिष्यों को जीवन-कौशल और नैतिक मूल्यों का भी ज्ञान प्रदान करते हैं। मानव जाति के लिए नई सोच और दृष्टिकोण की अपेक्षा भी शिक्षकों से ही की जाती है। शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका समाज को सशक्त और समृद्ध बनाने में भी है।

हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा और प्राचीन ग्रंथों में जगह-जगह एक आदर्श गुरु के गुणों को वर्णित किया गया है। स्कंद पुराण के गुरु-स्तोत्रम् में तो गुरुओं की तुलना ब्रह्मा, विष्णु और महेश से की गई है तथा गुरु को साक्षात् परब्रह्म माना गया है। एक अच्छे गुरु में गहन ज्ञान, विद्वत्ता, करुणा, नैतिकता व चरित्र, नवीनता, नवाचार, अनुशासनप्रियता और समानता का भाव अपेक्षित है। यही गुण एक गुरु को महान बनाते हैं और शिष्यों के जीवन में सकारात्मक प्रभाव डालते हैं । अपनी सदी के महान कवि और संत कबीरदास जी ने भी कहा है 'गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोंट' – अर्थात् गुरु कुम्हार है और शिष्य घड़ा है जो गढ-गढ कर शिष्य की कमियों को दूर करता है। शिक्षक अपने सफल मार्गदर्शन द्वारा शिष्यों को उनकी शक्तियों से परिचित कराते हुए उनके विकास के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। शिक्षक समाज के भविष्य निर्माताओं को तैयार करने में एक अहम भूमिका निभाते हैं।

(क) शिक्षक शिक्षा के साथ-साथ शिष्यों को प्रदान करता है: **1**

(A) नैतिक मूल्यों का ज्ञान
(B) धन-अर्जित करने का ज्ञान
(B) पेशेवर विकास का ज्ञान
(D) भविष्य सुनिश्चित करने का ज्ञान

(ख) गुरु को ब्रह्मा क्यों कहा गया है? **1**

(A) छात्रों के हित गुरु के भीतर छिपी कल्याण-भावना के कारण
(B) समाज के भविष्य निर्माताओं को तैयार करने की भूमिका के कारण
(C) छात्रों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालने के कारण
(D) रोजगार हेतु विद्यार्थियों में कौशल विकास करने के कारण

(ग) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए: **1**

कथन: मानव जाति के लिए नई सोच और दृष्टिकोण विकसित करना शिक्षक का दायित्व है।

कारण: हमारी ज्ञान परंपरा और ग्रंथों में गुरु को महान बताया गया है।

(A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
(B) कारण सही है लेकिन कथन गलत है।
(C) कथन सही है लेकिन कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है।
(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(घ) शिक्षक को पथ-प्रदर्शक क्यों कहा जाता है? किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए। **2**

(ङ) कबीरदास जी ने गुरु की तुलना कुम्हार से क्यों की है? किन्हीं दो कारणों को स्पष्ट कीजिए। **2**

उत्तर. (1). (क) - (A). नैतिक मूल्यों का ज्ञान
(ख) - (B). समाज के भविष्य निर्माताओं को तैयार करने की भूमिका के कारण
(ग) - (C). कथन सही है क्योंकि शिक्षक का दायित्व है कि वह नई सोच और दृष्टिकोण विकसित करे। कारण सही है लेकिन यह कथन की सही व्याख्या नहीं करता। इसलिए सही विकल्प (C) है।
(घ). शिक्षक अपने सफल मार्गदर्शन द्वारा शिष्यों को उनकी शक्तियों से परिचित कराते हुए उनके जीवन को संवारता है। शिक्षक केवल शैक्षिक ज्ञान ही नहीं बल्कि नैतिक और सामाजिक मूल्यों का भी बोध कराता है।
(ङ). जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी के घड़े को बाहर से सहारा देकर और अंदर से थपकी देकर एक नवीन आकार देता है, उसी प्रकार गुरु भी अपने छात्रों को सही शिक्षा और अनुशासन देकर योग्य बनाता है। गुरु अपने शिष्यों के अंदर छिपी हुई प्रतिभा को निखारता है और उन्हें समाज के लिए उपयोगी बनाता है।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

लीक पर वे चले जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।
साक्षी हों राह रोके खड़े
पीले बाँस के झुरमुट,
कि उनमें गा रही है जो हवा
उसी से लिपटे हुए सपने हमारे हैं।
शेष जो भी हैं:

पद

–सूरदास

6

पाठ व पाठ भार

पाठ के अवयव

1. कवि परिचय
2. भावार्थ सहित पद्य
3. प्रश्न अभ्यास
   (क) प्रश्नोत्तर (ख) रचना एवं अभिव्यक्ति
   (ग) पाठेतर सक्रियता
4. परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
   (क) बहुविकल्पीय प्रश्न (ख) पद्यांश आधारित प्रश्न
   (ग) लघु उत्तरीय प्रश्न

पाठ भार

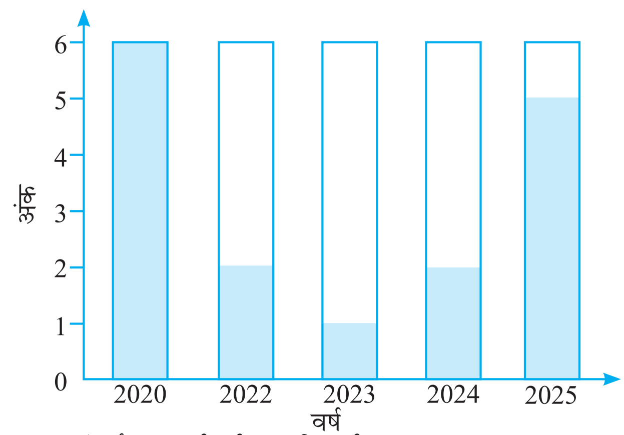

*वर्ष 2021 की परीक्षा स्थगित रही।

कवि परिचय

नाम	:	सूरदास
जन्म समय	:	सन् 1478
मृत्यु समय	:	सन् 1583
जन्म-स्थान	:	रुनकता या रेणुका
मृत्यु-स्थान	:	पारसौली
प्रमुख कृतियाँ	:	सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली

भावार्थ सहित पद्य

(1)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।

शब्दार्थ: **बड़भागी**– भाग्यशाली। **अपरस**– अछूता, अलिप्त, दूर। **तगा**– धागा, बंधन। **नाहिन**– नहीं। **अनुरागी**– प्रेम में डूबा हुआ। **पुरइनि पात**– कमल का पत्ता। **देह**– शरीर। **दागी**– दाग, धब्बा। **माहँ**– में। **ताकौं**– उसको। **प्रीति**– प्रेम। **पाउँ**– पाँव। **बोर्यौ**– डुबोया। **परागी**– मुग्ध हुई, मोहित हुई। **अबला**– नारी। **भोरी**– भोली। **गुर**– गुड़। **चाँटी**– चींटी। **पागी**– पगी हुई, लिपटी हुई।

भावार्थ– गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य कसती हुई कहती हैं- हे उद्धव! तुम तो बड़े भाग्यवान हो। तुम हमेशा प्रेम रूपी बंधन से दूर रहे हो। तुमने कभी प्रेम के खिंचाव को जाना नहीं है। तुम्हारा मन कभी कृष्ण के प्रेम में डूबा नहीं है। तुम जल में पलने वाले कमल के पत्तों के समान हो जो जल में रहकर भी उसके दाग-धब्बों से बचा रहता है। आशय यह है कि तुमने कृष्ण के संग रहकर भी कभी उससे प्रेम नहीं किया। जिस प्रकार जल की मटकी में तेल की बूँद रहती है। वह जल में रहकर भी अपने ऊपर जल का प्रभाव नहीं आने देती, उसी प्रकार तुम भी कृष्ण के संग रहकर उससे अछूते रहे हो। तुमने कभी उसका प्रेम अपने मन में आने नहीं दिया। यह अच्छा ही किया उद्धव कि तुमने कभी प्रेम की नदी में पाँव नहीं रखा। न ही तुम्हारी दृष्टि कृष्ण के रूप-सौंदर्य पर मुग्ध हुई। यह तो हमीं भोली अबला गोपियाँ हैं जो कृष्ण प्रेम में इस प्रकार लिपट गई हैं जैसे गुड़ के साथ चींटियाँ लिपट जाती हैं।

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

शब्दार्थ: **माँझ**- में, अंदर। **अवधि**- समय। **अधार**- आधार। **आस**- आशा। **आवन की**- आने की। **विथा**- व्यथा, दुख। **जोग**- योग। **बिरह**- वियोग, बिछोह, बिछुड़न। **दही**- जली। **हुती**- थीं। **गुहारि**- रक्षा के लिए पुकारना। **जितहिं तैं**- जहाँ से। **धार**- योग की धारा। **धीर**- धीरज, धैर्य। **घरहिं**- रखें, धारण करें। **क्यौं**- कैसे। **मरजादा**- मर्यादा, प्रतिष्ठा। **लही**- नहीं रही, नहीं रखी।

भावार्थ- विरह-व्यथित गोपियाँ कृष्ण के मित्र उद्धव को उलाहना देती हुई कहती है- उद्धव! हमारे मन की प्रेम-भावना मन में ही रह गई है। हमें कृष्ण से प्रेम नहीं मिला, न ही उसके अभाव में हम अपनी भावना व्यक्त कर सकीं। अब तुम्हीं बताओ, हम अपनी यह व्यथा किसे जाकर कहें? प्रेम की पीड़ा को कहा भी तो नहीं जा सकता। हम अब तक कृष्ण के आने की अवधि को अपने प्राणों का आधार बनाए हुए थी। इसी आशा से हम तन और मन की व्यथा सह रही थीं। परंतु अब तुम्हारे द्वारा दिए गए इस योग-संदेश को सुन-सुन हमारी विरह व्यथा और अधिक भड़क उठी है। हम विरह की ज्वाला में जली जा रही हैं।

हमारा दुर्भाग्य देखो, हम जिधर से अपनी रक्षा के लिए सहारा चाह रही थीं, उधर से ही योग-साधना की धारा बही चली आ रही है। अर्थात् हम चाह रही थीं कि कृष्ण हमसे आकर मिलेंगे और हमारी प्रेम-भावना संतुष्ट होगी, परंतु उन्होंने तो उलटे हमारे लिए योग-मार्ग का सिद्धांत भेज दिया, जो हमें सदा-सदा के लिए कृष्ण से दूर करना चाहता है। सूरदास गोपियों के माध्यम से कह रहे हैं- अब तो कृष्ण ने सारी लोक-मर्यादाएं तज दी हैं। उन्होंने हमारा प्रेम निभाने की बजाय हमें धोखा दिया है। भला हम धैर्य कैसे धारण करें?

(3)

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

शब्दार्थ: **हरि**- भगवान कृष्ण। **हारिल**- एक पक्षी जो सदैव अपने पंजों में एक लकड़ी थामे रहता है। **लकरी**- लकड़ी। **क्रम**- कर्म। **नंद-नंदन**- कृष्ण, नंद का बेटा। **उर**- हृदय। **पकरी**- पकड़ी। **निसि**- रात। **कान्ह-कान्ह**- कन्हैया-कन्हैया। **जक री**- रटती रहती है। **जोग**- योग-संदेश। **करुई**- कड़वी। **सु**- वह। **ब्याधि**- रोग, पीड़ा पहुँचाने वाली वस्तु। **तिनहिं**- उन्हें। **मन चकरी**- मन में चक्कर या दुविधा बनी रहती है।

भावार्थ- गोपियाँ उद्धव को कहती हैं-श्री कृष्ण! हमारे लिए हरि हारिल के पंजों में थामी हुई लकड़ी के समान हैं। जिस प्रकार हारिल पक्षी लकड़ी को किसी हाल में नहीं छोड़ता, उसी भाँति हम भी कृष्ण को दृढ़ता से थामे हुए हैं। हमने मन से, कर्म से, वचनों से कृष्ण को हृदय में दृढ़ता से बसाया हुआ है। हम जागते-सोते, रात-दिन, यहाँ तक कि सपने में भी कन्हैया-कन्हैया नाम की रट लगाए रहती हैं। हम जब तुम्हारे मुँह से योग-साधना की बात सुनती हैं तो हमें तुम्हारा यह संदेश कड़वी ककड़ी के समान कड़वा और अरुचिकर लगता है। तुम तो हमारे लिए ऐसी बीमारी ले आए हो, जो हमने न तो कभी देखी, न सुनी और न कभी इसका व्यवहार करके देखा। गोपियाँ कहने लगीं-उद्धव ! तुम यह योग-साधना का संदेश उन लोगों को दो जिनके हृदय भटकन में हैं, जिनकी कहीं कोई आस्था नहीं है। हम तो पूर्णरूप से कृष्ण की दीवानी हैं। हम यह योग-संदेश क्या करेंगी?

(4)

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

शब्दार्थ: **पढ़ि आए**- सीख आए। **मधुकर**- भ्रमर, भँवरा, यहाँ उद्धव। **हुते**- थे। **पठाए**- भेजे। **आगे के**- पहले के। **पर हित**- दूसरों की भलाई।

डोलत धाए- दौड़ते फिरते थे। **फेर पाइ हैं**- फिर से पा लेंगी। **अनीति**- अन्याय। **आपुन**- स्वयं, खुद। **जे**- जो। **जाहिं सताए**- सताया जाए।

भावार्थ- गोपियाँ उद्धव से व्यंग भाव में कहतीं हैं कि श्री कृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है। भौरें रूपी उद्धव की सारी बातें समझ कर, उनसे कृष्ण का समाचार प्राप्त करके वे गोपियाँ कहती हैं कृष्ण तो पहले से ही बहुत चालाक थे पर अब उन्होंने बड़े-बड़े गुरु ग्रन्थ पढ़ लिए हैं अर्थात् गुरुओं से शिक्षा प्राप्त कर ली है जिससे उनकी बुद्धि और चतुर हो गई है तभी तो हमारे बारे में सब कुछ जानते हुए भी उन्होंने हमारे पास उद्धव से योग का सन्देश भेजा है। गोपियाँ पुनः उद्धव जी का पक्ष लेते हुए कहती हैं की इसमें इनका कोई दोष नहीं है, ये भले मनुष्य हैं जो दूसरों के कल्याण करने में आनन्द का अनुभव करते हैं, इसी उदेश्य में इधर उधर घूमते रहते हैं । गोपियाँ उद्धव से कहती हैं की आप जाकर कहिएगा कि यहाँ से मथुरा जाते समय श्रीकृष्ण अपने साथ हमारा मन भी ले गए थे, उसे वे वापस कर दें। श्रीकृष्ण अत्याचारियों को दंड देने का काम करने मथुरा गए हैं परन्तु वे स्वयं अत्याचार करते हैं। कविवर सूरदास कहते है की गोपियाँ उद्धव से कहती हैं की आप श्रीकृष्ण से कहिएगा कि एक राजा को हमेशा चाहिए की वो प्रजा के हित का ख्याल रखे। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचने दे, यही वास्तविक राजधर्म है।

क्या सीखा?

अपने प्रभु के प्रति प्रेम की भावना रखनी चाहिए।

प्रश्न अभ्यास (NCERT)

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर: गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान व्यंग के रूप में कहा गया है। वे वास्तव में उद्धव को भाग्यहीन मानती है और कहती है की यह उद्धव का दुर्भाग्य है कि श्रीकृष्ण के इतने निकट रहकर भी वे उनके प्रेम में नहीं पड़े। भगवान के प्रेम रूपी आनंद से वे सर्वथा दूर रहे, उनके संग रहकर भी कृष्ण के अनुराग से अपरिचित रहे ये उद्धव की भाग्यहीनता ही है।

प्रश्न 2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किससे की गई है?

उत्तर: गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से की है-

(*i*) पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी: गोपियाँ उद्धव की तुलना जल में रहने वाले कमल के पत्ते से करती है। वे कहती है की कमल का पत्ता जल में डूबे रहने के बाद भी जल से भीगता नहीं उसी प्रकार उद्धव भी श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनसे भिन्न बने हुए हैं।

(*ii*) ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी: गोपियाँ दूसरा उदाहरण जल के मध्य रहने वाली तेल की गागर का देती है । तेल की गागर जल के मध्य रहकर भी उसमें डूबती नहीं है उसी प्रकार उद्धव भी कृष्ण के समीप रहकर भी उनके प्रेम में डूबे नहीं हैं।

प्रश्न 3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर: गोपियों ने उद्धव को उलाहना देने के लिए कलम के पत्ते, तेल की गागर, प्रेमरूपी नदी, कड़वी ककड़ी के उदाहरणों का प्रयोग किया है। वे इन उदाहरणों के माध्यम से उद्भव के योग को नीरस और उन्हें प्रेम भाव से रहित बताती हैं।

प्रश्न 4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर: गोपियाँ विरहाकुल थीं। वे अपने मन की विरह व्यथा को यह मानकर अभी तक झेल रही थीं कि उनके प्रिय कृष्ण लौट आएँगे। उनके आगमन की अवधि की आशा उनके मन में बनी हुई थी। पर जब उनके स्थान पर उद्धव आए और वह भी योग का संदेश लेकर तब उनके विरह की अग्नि और भी भड़क उठी। इस संदेश ने उनकी विरहाग्नि में घी का काम किया। उनके विरह की अग्नि तीव्र हो उठी। अब उनके धैर्य का बांध टूट गया।

प्रश्न 5. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर: सूरदास प्रेम की मर्यादा बताते है की प्रेम के बदले प्रेम ही दिया जाता है। लोक में प्रेमी और प्रेमिका दोनों प्रेम को व्यक्त करते है यही प्रेम की मर्यादा है। गोपियाँ कहती है की हम तो प्रेम को व्यक्त कर रहे किंतु श्रीकृष्ण ने उद्धव के माध्यम से योग संदेश भेज कर प्रेम की मर्यादा कि तोड़ दिया है। उन्होंने प्रेम की मर्यादा का उल्लंघन किया है।

प्रश्न 6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर: कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने कई प्रकार से अभिव्यक्त किया है-

(*i*) हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी

(हम कृष्ण प्रेम में ऐसे पगी हुई हैं जैसे गुड़ में चींटी, जागते-सोते, स्वप्न में भी कृष्ण कृष्ण जप रही है।)

(*ii*) हमारैं हरि हारिल की लकरी

(कृष्ण के साथ हमारा संबंध हारिल की लकड़ी के समान अभिन्न है)

(*iii*) मन क्रम वचन नंद नंदन उर, यह दृढ़ कर पकरी

जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।

(गोपियाँ श्रीकृष्ण-प्रेम में पूरी तरह रम गई हैं)

वे जागते-सोते स्वप्न में भी कृष्ण-कृष्ण जप रहीं हैं।

प्रश्न 7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर: गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा उन लोगों को देने की बात कही है जिनके मन चकरी के समान घूमते रहते हैं अर्थात् जिनके मन स्थिर नहीं हैं। उन्हें ही योग के द्वारा मन एकाग्र करने की आवश्यकता है। गोपियों का मन तो पहले ही श्रीकृष्ण में स्थिर है।

प्रश्न 8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर: प्रस्तुत पदों के आधार पर कहा जा सकता है कि गोपियाँ योग-साधना को अपने लिए अनुपयुक्त और अव्यावहारिक मानती हैं। वे तो कृष्ण के प्रति एकाग्र भाव से प्रेम-भक्ति रखती हैं अतः उनके लिए इसका कोई उपयोग नहीं है। गोपियों की दृष्टि में योग-साधना कड़वी ककड़ी के समान है, जिसे निगला नहीं जा सकता। योग-साधना एक ऐसी बीमारी है जिसके बारे में उन्होंने ना कभी पहले सुना और न देखा। हाँ, यह योग-साधना उनके लिए उपयोगी हो सकती हैं जिनका चित्त अस्थिर रहता है।

प्रश्न 9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर: गोपियों के अनुसार राजा का धर्म प्रजा की रक्षा करना होना चाहिए। उसे प्रजा को कभी नहीं सताना चाहिए। राजा को अनीति नहीं करनी चाहिए। राजधर्म का पालन करना चाहिए।

प्रश्न 10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-कौन से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर: गोपियों को श्रीकृष्ण में निम्न परिवर्तन दिखाई दिए-

(*i*) अब कृष्ण सरल-भोले ना रहकर राजनीतिज्ञ बन गए हैं अर्थात् उनमें चालाकी आ गई है।

(*ii*) अब उन्होंने भारी ग्रंथ पढ़ लिए हैं।

(*iii*) अब वे अनीति करने लगे हैं।

(*iv*) अब वे राजधर्म की उपेक्षा करने लगे हैं।

इन बातों को देखकर गोपियां अपने मन को वापस लेने की बात कहती हैं जिसे श्रीकृष्ण ने चुरा लिया था।

प्रश्न 11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: गोपियाँ अपने वाक्चातुर्य के बल पर उद्धव को चुप करा देती हैं। उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(*i*) **तार्किकता:** गोपियाँ अपनी बात तर्कपूर्ण ढंग से कहती हैं। गोपियाँ तर्क देकर बताती हैं कि योग साधना की आवश्यकता उन्हें है जिनका चित्त स्थिर नहीं है क्योंकि योग यही काम तो करता है।

(*ii*) **वचन-वक्रता:** गोपियाँ अपने वक्र वचनों से उद्धव की बातों को काट देती हैं। वे योग साधना को अनदेखी, अनसुनी बीमारी बताती हैं।

(*iii*) **व्यंग्यात्मकता:** गोपियाँ उद्धव पर कठोर व्यंग्य करती हैं। वे उसे बड़भागी बताती हैं तो इसमें भी व्यंग्य है। वे उसे भाग्यहीन बताना चाहती हैं।

(*iv*) **उपालंभ:** गोपियाँ उद्धव के माध्यम से प्रेम का उपालंभ देती हैं। वे श्रीकृष्ण के परिवर्तित व्यवहार पर भी उपालंभ देती हैं।

प्रश्न 12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: सूर के "भ्रमरगीत" की मुख्य विशेषताएँ:

(*i*) सुर के भ्रमरगीत का उद्देश्य ज्ञान से प्रेम-भक्ति को सिद्ध करता है।

(*ii*) "भ्रमरगीत" की गोपियाँ योग को कड़वी ककड़ी के समान बताती हैं और उसे अव्यावहारिक कहती हैं।

(*iii*) "भ्रमरगीत" में उद्धव को गोपियों के व्यंग्य-बाण झेलने पड़ते हैं।

(*iv*) 'भ्रमरगीत' में गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम का परिचय मिलता है।

(*v*) 'भ्रमरगीत' में वियोग श्रृंगार की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।

(*vi*) सूर के भ्रमरगीत में वचन वक्रता का श्रेष्ठ रूप देखने को मिलता है क्योंकि यह उच्च कोटि का उपालंभ काव्य है।

(*vii*) 'भ्रमरगीत' में निर्गुण ब्रह्म के विरोध के स्वर उभरे हैं।

(*viii*) 'भ्रमरगीत' में गोपियों के माध्यम से योग साधना को निरर्थक और अव्यावहारिक बताया गया है।

(*ix*) इसमें ज्ञान पर प्रेम की विजय अंकित की गई है।

(*x*) 'भ्रमरगीत' में मनोवैज्ञानिक पक्ष का विशेष ध्यान रख गया है।

(*xi*) 'भ्रमरगीत' का कला पक्ष अत्यंत सबल है। इसमें शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा प्रयुक्त हुई है।

(*xii*) इसमें संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है। इसमें व्यंग्य का समावेश है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 13. गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उत्तर: गोपियाँ उद्धव से कहती हैं यदि यह योग-संदेश इतना ही प्रभावशाली है तो कृष्ण इसे कृष्ण को क्यों नहीं देते? तुम यों करो, यह योग कृष्ण को जाकर दो। और बताओ! जिसकी जुबान

पर मीठी खाँड का स्वाद चढ़ गया हो, वह योग रूपी निबौरी क्यों खाएगा? फिर यह भी तो सोचो कि योग-मार्ग कठिन है। इसमें कठिन साधना करनी पड़ती है। हम गोपियाँ कोमल शरीर वाली और मधुर मन वाली हैं। हमसे यह कठोर साधना कैसे हो पाएगी। हमारे लिए यह मार्ग असंभव है।

प्रश्न 14. उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?

उत्तर: गोपियाँ वाक्चातुर्य हैं। वे बात बनाने में किसी को भी पछाड़ देती हैं। यहाँ तक कि ज्ञानी उद्धव उनके सामने गूंगे होकर खड़े रह जाते हैं। कारण यह है कि गोपियों के हृदय में कृष्ण-प्रेम का सच्चा ज्वार है। यही उमड़ाव, यही जबरदस्त आवेग उद्धव की बोलती बंद कर देता है। सच्चे प्रेम में इतनी शक्ति है कि बड़े-से-बड़ा ज्ञानी भी उसके सामने घुटने टेक देता है।

प्रश्न 15. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नजर आता है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जब गोपियों ने देखा कि जिस कृष्ण की वे बहुत समय से प्रतीक्षा कर रही थीं, वे नहीं आए। उसकी जगह कृष्ण से दूर ले जाने वाला योग-संदेश आ गया तो उन्हें इसमें कृष्ण की एक चाल नजर आई। वे इसे अपने साथ छल समझने लगी। इसीलिए उन्होंने आरोप लगाया कि-

"हरि हैं राजनीति पढ़ि आए"

आज की राजनीति तो सिर से पैर तक छल-कपट से भरी हुई है। किसी को किसी भी राजनेता के वायदों पर विश्वास नहीं रह गया है। नेता बातों से नदियाँ, पुल, सड़कें और न जाने क्या-क्या बनाते हैं किंतु जनता लुटी-पिटी-सी नजर आती है। आजादी के बाद से गरीबी हटाओ का नारा लग रहा है किंतु तब से लेकर आज तक गरीबों की कुल संख्या में वृद्धि ही हुई है। इसलिए गोपियों का यह कथन समकालीन राजनीति पर खरा उतरता है।

पाठेतर सक्रियता

- प्रस्तुत पदों की सबसे बड़ी विशेषता है गोपियों की वाग्विदग्धता। आपने ऐसे और चरित्रों के बारे में पढ़ा या सुना होगा जिन्होंने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई, जैसे-बीरबल, तेनालीराम, गोपाल भांड, मुल्ला नसिरूद्दीन आदि। अपने किसी मनपसंद चरित्र के कुछ किस्से संकलित कर एक अलबम तैयार करें।

उत्तर: विद्यार्थी अलबम तैयार करें।

- सूर रचित अपने प्रिय पदों को लय व ताल के साथ गाएँ।

उत्तर: सूर के कुछ पद आगे दिए जा रहे हैं। विद्यार्थी उन्हें लय व ताल के साथ पढ़ें-

(1)

जाग ठगौरी ब्रज न बिकेहै।
मूरी के पातनि के बदलै, को मुक्ताहल दैहै।।
यह ब्यौपार तुम्हारी उधौ, ऐसै ही धय रहे।
जिन पै तैं लै आए उधौ, तिनहिं के पेट समैहै।।
दाख छाँड़ि के कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै।
गुन करि मोही सूर सावरै को निरगुन निरबैहै।।

(2)

बूझत स्याम कौन तू गौरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखो नाहिं कबहूँ ब्रज खोरी।।
काहे को हम ब्रज-तन आवतिं, खेलति रहति आपनी पौरी।
सुनत रहतिं स्रवननि नंद-ढोटा
करत फिरत माखन-दधि-चोरी।।
तुम्हारौ कहा चोरि हम लैहैं,
खेलन चलो संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि, राधिका भोरी।।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

पाठ के आधार पर सही विकल्प का चयन करें- (एक अंकीय)

प्रश्न 1. गोपियों ने स्वयं को भोली क्यों कहा है?
(क) वे मूर्ख थीं
(ख) वे छल-कपट और चतुराई से दूर थीं
(ग) वे उद्धव की बातों में आ गई थीं
(घ) वे किसी का कहना नहीं मानती थीं

प्रश्न 2. गोपियों ने अपनी तुलना किससे की है?
(क) गुड़ से लिपटी चींटी से (ख) राधा से
(ग) कमल के पत्ते से (घ) तेल की मटकी से

प्रश्न 3. गोपियाँ अपने मन में कौन-सी बात रखे हुए हैं?
(क) गोपियाँ कृष्ण से मिलना चाहती हैं।
(ख) गोपियाँ राधा से मिलना चाहती हैं।
(ग) दोनों (क) और (ख)
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4. "सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी" पंक्ति में निहित भाव है- **(CBSE 2023)**

(क) प्रेम ऐसा रोग है जैसे कड़वी ककड़ी

(ख) योग साधन ऐसी है जैसी कड़वी ककड़ी

(ग) उद्धव के विचार कड़वे है

(घ) श्रीकृष्ण ऐसे है जैसे कड़वी ककड़ी

प्रश्न 5. सूरदास के पद 'अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यों पागी' से गोपियाँ क्या कहना चाहती हैं?

(क) हम भोली हैं, चींटी और गुड़ हैं।

(ख) जैसे चींटी गुड़ ले जाते नहीं थकती, हम भी नहीं थकते।

(ग) चींटी गुड़ पर अपने प्राण त्याग देती है।

(घ) भोली गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में डूबी हैं जैसे चींटी का गुड़ से प्रेम है।

प्रश्न 6. गोपियों को उद्धव का शुष्क संदेश पसंद न आने का मुख्य कारण था-

(क) उद्धव के कठोर शब्द एवं अति कटु व्यवहार

(ख) उद्धव में वाक्पटुता की कमी एवं हृदयहीनता

(ग) गोपियों का प्रेम मार्ग के स्थान पर ज्ञान मार्ग को पसंद

(घ) गोपियों का ज्ञान मार्ग के स्थान पर प्रेम मार्ग को पसंद करना

प्रश्न 7. सूरदास के पद 'अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यों पागी' से गोपियाँ क्या कहना चाहती हैं? **(CBSE 2023)**

(क) हम भोली हैं, चींटी और गुड़ हैं।

(ख) जैसे चींटी गुड़ ले जाते नहीं थकती, हम भी नहीं थकते।

(ग) चींटी गुड़ पर अपने प्राण त्याग देती है।

(घ) भोली गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में डूबी हैं जैसे चींटी का गुड़ से प्रेम है।

पद्यांश आधारित वैकल्पिक प्रश्न

पद्यांश के आधार पर सही विकल्प का चयन करें- (एक अंकीय)

(1)

ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्यो, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।

प्रश्न 1. गोपियाँ किसे बड़भागी कहती हैं?

(क) कृष्ण (ख) उद्धव

(ग) चींटी (घ) नदी

प्रश्न 2. गोपियों ने उद्धव को बड़भागी क्यों कहा है?

(क) ऐसा कहकर गोपियों ने उद्धव पर व्यंग्य किया है

(ख) क्योंकि उद्धव बहुत ही भाग्यवान है

(ग) उद्धव बहुत ज्ञानी थे और गोपियाँ उनके ज्ञान का लोहा मानती थीं

(घ) वे कृष्ण के सखा थे, इसलिए उनको बड़भागी कहा है

प्रश्न 3. गोपियों ने उद्धव के अनासक्त रहने की तुलना किससे की है?

(क) कमल के पत्ते से

(ख) तेल की मटकी से

(ग) कमल के पत्ते और तेल की मटकी दोनों से

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4. प्रीति-नदी में कौन-सा अलंकार है ?

(क) यमक (ख) रूपक

(ग) अनुप्रास (घ) उपमा

प्रश्न 5. 'गुर चाँटी ज्यौं पागी' में गुर (गुड़) से किसकी तुलना हुई है?

(क) गुड़ से उद्धव की तुलना हुई है

(ख) गुड़ से कृष्ण की तुलना हुई है

(ग) गुड़ से ब्रजवासियों की तुलना हुई है

(घ) गुड़ से गोपियों की तुलना हुई है

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

प्रश्न 1. किसके मन की बात मन में रह गई?

(क) गोपियों (ख) राधा

(ग) कृष्ण (घ) उद्धव

प्रश्न 2. गोपियों की विरहाग्नि और अधिक क्यों बढ़ गई?

(क) योग के संदेश को सुनकर

(ख) वियोग के संदेश को सुनकर

(ग) दोनों (क) और (ख)

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3. गोपियाँ क्या व्यथा सह रही थीं?

(क) राधा के वियोग की व्यथा

(ख) कृष्ण के वियोग की व्यथा

(ग) उद्धव के वियोग की व्यथा

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4. 'धार बही' का क्या आशय है?

(क) प्रेम-संदेश की धारा बह चली

(ख) वियोग-संदेश की धारा बह चली

(ग) योग-संदेश की धारा बह चली

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5. गोपियाँ धीरज धारण क्यों नहीं कर पा रहीं?
(क) कृष्ण ने उनके साथ प्रेम में धोखा किया
(ख) राधा ने उनके साथ प्रेम में धोखा किया
(ग) दोनों (क) और (ख)
(घ) इनमें से कोई नहीं

(3)

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

प्रश्न 1. उद्धव गोपियों के लिए किस प्रकार की व्याधि लेकर आए हैं?
(क) वियोग (ख) योग
(ग) कर्म (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 2. करुई ककरी में प्रयुक्त अलंकार लिखिए।
(क) उपमा (ख) अनन्वय
(ग) अनुप्रास (घ) रूपक

प्रश्न 3. इस काव्यांश में किस भाषा का प्रयोग हुआ है?
(क) अवधी भाषा (ख) हिंदी भाषा
(ग) संस्कृत भाषा (घ) ब्रज भाषा

प्रश्न 4. 'योग संदेश' किसे दिए जाने की बात गोपियों ने की है?
(क) जिनका मन चंचल नहीं है।
(ख) जिनका मन स्थिर नहीं है।
(ग) जिसे ईश्वरीय प्रेम की अनुभूति नहीं है।
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5. हमारैं हरि हारिल में प्रयुक्त अलंकार लिखिए।
(क) उपमा (ख) अनन्वय
(ग) अनुप्रास (घ) रूपक

(4)

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

प्रश्न 1. 'मधुकर' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है?
(क) गोपियों के लिए (ख) भौरे के लिए
(ग) कृष्ण के लिए (घ) उद्धव के लिए

प्रश्न 2. 'हरि है राजनीति पढ़ि आए' – जाहि सताए" पद में किस शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है?
(क) अभिधा (ख) लक्षणा
(ग) व्यंजना (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3. गोपियों ने सच्चे राजधर्म को कैसे परिभाषित किया है?
(क) प्रजा का पालन
(ख) प्रजा के सुखों का ध्यान रखना
(ग) प्रजा को बिल्कुल न सताना
(घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 4. बढ़ी बुद्धि में प्रयुक्त अलंकार लिखिए।
(क) उपमा (ख) अनन्वय
(ग) अनुप्रास (घ) रूपक

प्रश्न 5. पुराने जमाने में सज्जन क्या किया करते थे?
(क) लोगों के कल्याण के लिए भागे-भागे फिरते थे
(ख) दान-धर्म में समय बिताते थे
(ग) ईश्वर की आराधना करते थे
(घ) स्वार्थी थे

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है? **(CBSE 2022)**

प्रश्न 2. गोपियों ने योग की शिक्षा को किस-किस के समान बताया है और क्यों? **(CBSE 2022)**

प्रश्न 3. "ते क्यौं अनीति करें आपुन, जे और अनीति छुड़ाए" पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह पंक्ति किसके अनीति करने पर कही गई है और क्यों? **(CBSE 2022)**

प्रश्न 4. 'उद्धव, तुम हो अति बड़भागी' में किन लोगों पर व्यंग्य है? सूरदास इसके माध्यम से क्या कहना चाहते हैं?

प्रश्न 5. सूरदास अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी में गोपियों की कौन-सी मनोदशा प्रकट हुई है?

प्रश्न 6. गोपियों के अनुसार प्रीति की नदी में किसने पैर नहीं रखा है और उन्हें उसकी दृष्टि में क्या अभाव दिखाई दे रहा है?

प्रश्न 7. गोपियों के लिए हारिल पक्षी के पैरों की लकड़ी के समान कौन अभिन्न है? गोपियों ने मन, वचन और कर्म से किसे मजबूती से पकड़ रखा है?

प्रश्न 8. उद्धव गोपियों के लिए कौन-सा रोग लेकर आ गए जैसा न तो उन्होंने सुना, न देखा या अनुभव ही किया।

प्रश्न 9. 'जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।' इस पंक्ति द्वारा गोपियों की किस मन:स्थिति का वर्णन किया गया है?

प्रश्न 10. गोपियों को योग की बात किसके समान लगती है और क्यों? पद के आधार पर लिखिए।

प्रश्न 11. गोपियों ने श्री कृष्ण के प्रति अपने एकनिष्ठ प्रेम को किन उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया है? **(CBSE SQP 2023)**

प्रश्न 12. 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।'
कृष्ण किस प्रकार की राजनीति कर रहे हैं? गोपियाँ श्रीकृष्ण से क्यों नाराज़ हैं? **(CBSE APQ 2023)**

उत्तरमाला

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (क) 4. (ख) 5. (घ)
6. (घ) 7. (घ)

पद्यांश आधारित वैकल्पिक प्रश्न

(1)

1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (ख) 5. (घ)

(2)

1. (क) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (क)

(3)

1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (घ)

(4)

1. (घ) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1: गोपियों ने उद्धव को सुझाव दिया है कि वह योग की शिक्षा उन लोगों को दे जिनके मन में कोई दुविधा हो। जिनकी कहीं आस्था न हो।

उत्तर 2: गोपियों ने योग की शिक्षा को कभी कड़वी-ककड़ी के समान बताया है तो कभी किसी बीमारी के समान, कभी उन्होंने उसे चक्कर में डाल देने वाली चक्री के समान बताया है।

क्योंकि कारण यह है कि वे कृष्ण की दीवानी हैं। ये हर हाल में कृष्ण का प्रेम पाना चाहती हैं।

उत्तर 3: इसमें गोपियाँ कृष्ण को उलाहना दे रही हैं। वे कहती हैं- कृष्ण ने तो स्वयं ब्रज के लोगों को अन्याय से छुटकारा दिलाया है। तो वे स्वयं हमसे दूर होकर हम पर अन्याय क्यों कर रहे हैं। यहाँ कृष्ण के दूर चले जाने को अन्याय कहा गया है।

क्यों- वे कृष्ण से अत्यधिक प्रेम करती थीं।

उत्तर 4: इस काव्यांश में कृष्ण के प्रेम से वंचित लोगों पर व्यंग्य है। जिन लोगों ने भगवान से कभी प्रेम नहीं किया, उनका जीवन व्यर्थ है। वे जीवन के सबसे मूल्यवान अनुभव से वंचित रहे हैं। वे अभागे हैं। प्रभु-प्रेम में चाहे कितनी भी तड़प और साधना हो, किंतु जीवन को सार्थकता उसी से मिलती है।

उत्तर 5: इस काव्य पंक्ति में गोपियों की प्रेम-निष्ठा प्रकट हुई है। वे स्वभाव से भोली हैं। वे प्रेम में 'हानि-लाभ' या 'खोए-पाए' की परवाह नहीं करतीं। वे तो सच्चे मन से कृष्ण के प्रेम में लिप्त हो गई हैं। मन-ही-मन उन्हें अपनी इस लीनता पर गर्व भी है।

उत्तर 6: गोपियों के अनुसार उद्धव ने कभी प्रीति की नदी में पैर नहीं रखा। उनके अनुसार, प्रेम के अभाव में उद्धव का जीवन व्यर्थ है। वह अभागा है।

उत्तर 7: गोपियों के लिए कृष्ण हारिल पक्षी के पैरों की लकड़ी के समान प्रिय हैं। उन्होंने अपने मन, कर्म और वचन से उन्हें अपने मन में धारण किया हुआ है।

उत्तर 8: उद्धव गोपियों के लिए योग संदेश नाम का नया रोग ले आए हैं जिसके बारे में उन्होंने न तो पहले कभी सुना था न जाना था और न ही अनुभव किया था।

उत्तर 9: इस पंक्ति द्वारा गोपियों की प्रेममग्न दशा का वर्णन किया गया है। वे पूरी तरह कृष्ण के प्रेम में पागल हो गई हैं।

उत्तर 10: गोपियों को योग की बात कड़वी ककड़ी के समान कटु लगती है क्योंकि वे कृष्ण से प्रेम चाहती हैं, योग सुनना नहीं चाहती।

उत्तर 11: स्वयं को हारिल पक्षी व श्रीकृष्ण को लकड़ी की भाँति बताया है। हारिल पक्षी की भांति ही के श्रीकृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण गुड़ से चिपटी चींटियों के समान मन, कर्म और वचन से श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित वे श्रीकृष्ण को कभी अपने आप से अलग नहीं होने देना चाहती।

उत्तर 12: (1) छल और कपटपूर्ण व्यवहार

(2) श्रीकृष्ण स्वयं नहीं आकर ब्रज की युवतियों को उद्भव के माध्यम से योग-साधना का संदेश भिजवा रहे हैं।

अभ्यास प्रश्नपत्र-2
हिन्दी (अ)

निर्धारित समय: 3 घंटे | **पूर्णांक: 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं - खंड **'अ'** और खंड **'ब'**। खंड **'अ'** में वस्तुपरक/बहुविकल्पीय और खंड **'ब'** में वस्तुनिष्ठ/वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं।
2. प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या **15** है और दोनों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य हैं।
3. यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए।
4. खंड **'अ'** में कुल **8** प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या **40** हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए **36** उपप्रश्नों के उत्तर दीजिये।
5. खंड **'ब'** में कुल **7** प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हुए सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

खंड-अ
(वस्तुपरक/बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसपर आधारित दिए गए अतिलघु उत्तरीय/लघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बंगाल की शस्य-श्यामला धरती का सौंदर्य अविस्मरणीय है। इसके मनोहर और उन्मुक्त सौंदर्य को प्रतिभाशाली रचनाकार अपने गीतों, निबंधों और कविताओं में बाँधने की कोशिश करते रहते हैं लेकिन इसके मायावी और लोकोत्तर आकर्षण का रंच मात्र ही वे रूपायित करने में सफल हो पाए हैं। अविभाजित बंगाल का सौंदर्य किसी भी संवेदनशील मस्तिष्क के भीतर हलचल पैदा कर सकता है। चाँदी सी चमकती मीलों लंबी नहरों और नदियों के बीच पन्नों की तरह चमकते हरे-भरे खेतों के चित्र संवेदनशील मन को अपूर्व आनंद से भर देते हैं। हरे-भरे खेतों में पके दानों की लहलहाती सुनहरी फसल, हवा में फुसफुसाते लंबे ताड़ के वृक्ष और साल की पत्तियों की बहती हुई मंद-मंद हवा, कंचनजंघा के उत्तंग शिखर, सुंदरवन के घने जंगल, दीघा के सुंदर रेतीले समुद्र तट और उत्तर बंगाल के हरे-भरे चाय के बागान आँखों में रचे बसे रहते हैं। प्राकृतिक छाटाओं से भरी-पूरी यह धरती युगों से महान लेखकों, कवियों और कलाकारों को प्रेरित करती रही है। इस अनोखे वरदान के केवल वही पात्र हैं जिन्हें इस धरती पर पैदा होने का सौभाग्य मिला है अथवा वे हैं जो अविभाजित बंगाल में रह चुके हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न **(1 × 3 = 3)**

क. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गद्यांश के आधार पर सही है?

A. फसल : घनी   B. समुद्र तट : रेतीले   C. कंचनजंघा : मंद हवा   D. चाय बागान : सुनहरे

ख. बंगाल की भूमि के विषय में कथन और कारण की सत्यता परखिए:

कथन: यह धरती युगों से महान लेखकों, कवियों और कलाकारों को प्रेरित करती रही है।

कारण: यह धरती युगों से प्राकृतिक छटाओं से भरपूर है।

A. कथन और कारण दोनों असत्य हैं।   B. कथन और कारण दोनों सत्य हैं।

C. कथन सत्य पर कारण असत्य है।   D. कथन असत्य है पर कारण सत्य है।

ग. इस गद्यांश का केंद्रिय-विषय है।

A. बंगाल के जादू को बताना   B. अविभाजित बंगाल की धरती का सौंदर्य

C. बंगाल में बिताए दिनों की याद   D. प्रकृति का मनुष्य के ऊपर पड़ने वाला प्रभाव

अतिलघु उत्तरीय/लघु उत्तरीय प्रश्न **(2 × 2 = 4)**

1. संवेदनशील मन को अपूर्व आनंद से भर देने के लिए आवश्यक तत्व क्या हैं?

2. लेखक की दृष्टि में बंगाल की शस्य-श्यामला धरती का सौंदर्य कैसा है?

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसपर आधारित दिए गए अतिलघु उत्तरीय/लघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सच हम नहीं, सच तुम नहीं, सच है महज संघर्ष ही।।
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम या कि तुम
जो नत हुआ, वह मृत हुआ, ज्यों वृंत से झरकर कुसुम
जो पंथ भूल रुका नहीं,
जो हार देख झुका नहीं,
जिसने मरण को भी लिया हो जीत, है जीवन वही।। सच हम नहीं...
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।
जो है जहाँ चुपचाप अपने आप से लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें,
काँटे चुभें, कलियाँ खिलें,
टूटे नहीं इंसान, बस संदेश यौवन का यही।। सच हम नहीं...
अपने हृदय का सत्य अपने आप हमको खोजना।
अपने नयन का नीर अपने आप हमको पोंछना।
आकाश सुख देगा नहीं,
धरती पसीजी है कहीं!
हर एक राही को भटककर ही दिशा मिलती रही।। सच हम नहीं...

बहुविकल्पीय प्रश्न **(1 × 3 = 3)**

क. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–

कथन (A): प्रतिकूलता के विरुद्ध जूझते हुए बढ़ना ही जीवन की सच्चाई है।

कारण (R): लक्ष्य-संधान हेतु मार्ग में भटक जाने का भय त्याग देना चाहिए।

A. कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) गलत है।
B. कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है।
C. कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं।
D. कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

ख. कविता के उपयुक्त शीर्षक का चयन कीजिए।

A. निराश पथिक B. संघर्ष ही जीवन है C. विकट परिस्थितियां D. सत्य की खोज

ग. अपने आपसे लड़ने का अर्थ है–

A. अपनी अच्छाइयों व बुराइयों से भलीभाँति परिचित होना
B. किसी मुद्दे पर दिल और दिमाग का अलग-अलग सोचना
C. अपने किसी गलत निर्णय के लिए स्वयं को संतुष्ट कर लेना
D. अपनी दुर्बलताओं की अनदेखी न करके उन्हें दृढ़ता से दूर करना

अतिलघु उत्तरीय/लघु उत्तरीय प्रश्न **(2 × 2 = 4)**

1. मरण अर्थात् मृत्यु को जीतने से कविता का क्या आशय है?

2. 'आकाश सुख देगा नहीं' धरती पसीजी है कहीं...' दी गई पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

3. निर्देशानुसार रचना के आधार पर वाक्य भेद पर आधारित पाँच अतिलघु उत्तरीय/लघु उत्तरीय प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये। **(1 × 4 = 4)**

1. 'मैं चाहता था कि आज हिंदी पढ़ूँ'। वाक्य को सरल वाक्य में परिवर्तित कीजिए।

2. संयुक्त वाक्य की परिभाषा व उदाहरण दीजिए?

Other Helpful Books

CBSE QUESTION & CONCEPT BANK

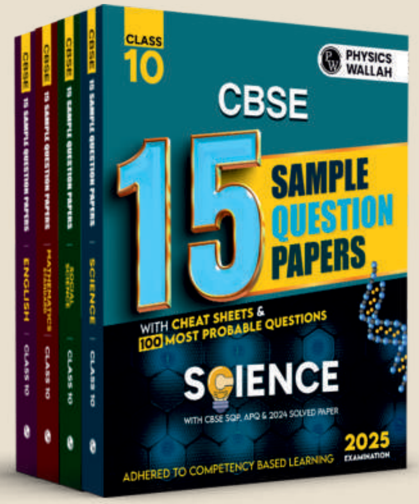

CBSE 15 SAMPLE QUESTION PAPERS

PAST 10 YEARS'

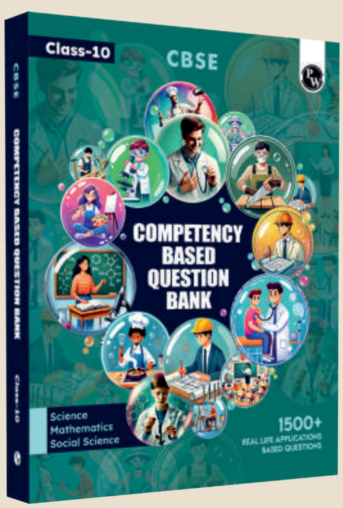

COMPETENCY BASED QUESTION BANK

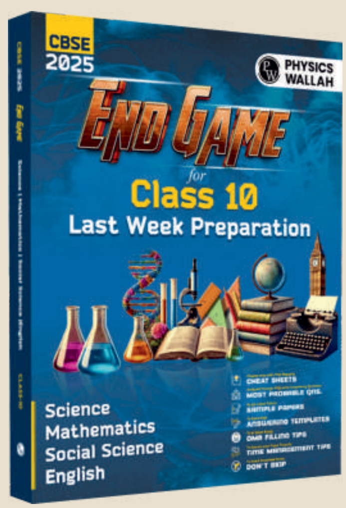

CBSE END GAME

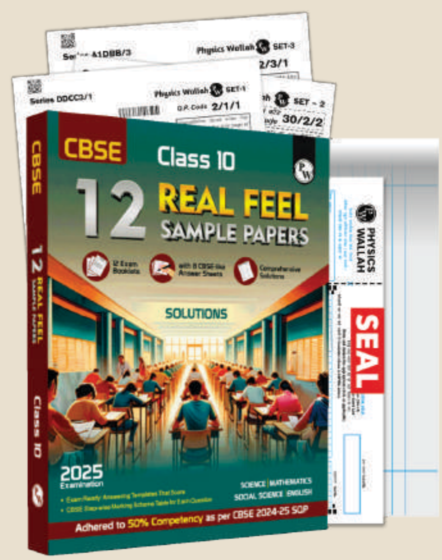

REAL FEEL SAMPLE PAPERS

₹ 325/-

PHYSICS WALLAH PUBLICATION

To Buy More Such Books
SCAN ME!

To share Feedback
SCAN ME!

ISBN 978-93-6897-994-4
9 789368 979944

801321ec-1b37-44ac-a059-e9dae486263b